

बाबा मुक्तानन्द की समयातीत सिखावनियाँ

“यदि तुम प्रतिकूलता को सहन नहीं कर सकते तो आनन्द तुमसे दूर ही रहेगा।”

~ बाबा मुक्तानन्द

गणेश राजामणी द्वारा लिखित व्याख्या

आध्यात्मिक यात्रा में, प्रतिकूलता, समता या समत्वभाव के मार्ग की बाधा नहीं है; प्रायः यही तो वह सीढ़ी होती है जो हमें समता तक पहुँचा देती है। बाबा मुक्तानन्द सिखाते हैं, सहन करने की क्षमता न हो तो आनन्द हमारी पहुँच से बाहर ही रहता है। यह सहनशीलता, कोई निष्क्रिय अवस्था नहीं है; इसके लिए अपने बोध में जागरूकतापूर्वक, आन्तरिक परिवर्तन लाना आवश्यक है। श्रीभगवद्गीता इस बात पर प्रकाश डालते हुए इसे स्पष्ट करती है कि सारे अनुभव अनित्य हैं, क्षणभंगुर हैं।^१ सुख-दुःख जैसे द्वन्द्व की अनुभूतियाँ अस्थायी हैं जो बदलते मौसमों की तरह आती-जाती रहती हैं। यह जान लेने से कि प्रतिकूलता या कठिनाई का समय मूलतः क्षणिक होता है, हम प्रतिकूलता के उस पल की तीव्रता से अलग होकर, अपने ध्यान को अन्तर की ओर मोड़ सकते हैं। इस अन्तर-स्थान में ‘गुरुस्मरण’ यानी श्रीगुरु का सुकोमल-सा आनन्दमय स्मरण, मन को प्रशान्ति में दृढ़ता से स्थिर कर देता है, और इसके फलस्वरूप एक मृदुल-सा आनन्द उभरने लगता है जो दुःख का स्थान नहीं ले लेता, बल्कि उसके माध्यम से हमें यह ज्ञात होता है कि वास्तव में आनन्द ही गहराई में विद्यमान है जो उभर रहा है। जैसे-जैसे हृदय तृप्ति से भरता जाता है, प्रतिकूलता विचलित करने वाली अपनी शक्ति खो देती है और हम अन्तर में विद्यमान उस दिव्य सत्ता की ओर और भी गहराई में खिंच जाते हैं। सही समझ के साथ सहन करने का अर्थ है, यह जान लेना कि जिस आनन्द को हम खोज रहे हैं, वह हमेशा से ही हमारे अन्दर मौजूद है। यह आनन्द अविचल रूप से और अपनी सम्पूर्णता में, हर तूफ़ान के तले रहता है, बस इस प्रतीक्षा में कि हम उसे याद करें। आनन्द की उसी अनुभूति में अवस्थित होने का हमें प्रयास करना चाहिए।



© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

^१ देखें, उदाहरणार्थ, श्रीमद्भगवद्गीता, २.१४।